

Acharya in Jyotish Ganit code No. (287)

Set No. 1

Question Booklet No. 00020

17P/252/17

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

Roll No. (Write the digits in words)

Serial No. of OMR Answer Sheet

2017

125

Day and Date

(Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only *blue/black ball-point pen* in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 30 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall *except the Admit Card without its envelope*.
3. *A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.*
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. *On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.*
6. *No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.*
7. *Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfair means.*
8. *Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.*
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR Answer Sheet** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

Total No. of Printed Pages : 24

[उपर्युक्त निर्देश हिन्दी में अन्तिम आवरण पृष्ठ पर दिये गए हैं।]

104,

SEAL



collegedunia.com
India's largest Student Review Platform

17P/252/17

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

152

Acharya in Jyotish Granth code No. (287)

२०१७

17P/252/17

No. of Questions : 120

प्रश्नों की संख्या : 120

Time : 2 Hours

Full Marks : 360

समय : 2 घण्टे

पूर्णाङ्क : 360

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries 3 (Three) marks. **One mark will be deducted for each incorrect answer. Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न 3 (तीन) अंकों का है। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा। प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक शून्य होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. केवलौ दैर्घ्यविस्तारौ भवतः

(1) गोले

(2) धरातले

(3) वप्रे

(4) घनक्षेत्रे

02. वृत्तस्य परिधेः खण्डं भवति -

(1) ज्या

(2) व्यासः

(3) चापम्

(4) शरः

17P/252/17

03. द्वादश राशयः समा भागाः स्मृताः :
- | | |
|------------------------|----------------------|
| (1) भवृत्तस्य | (2) नाडीवृत्तस्य |
| (3) याम्योत्तरवृत्तस्य | (4) अहोरात्रवृत्तस्य |
04. याम्योत्तरे समध्रुवस्थानयोरन्तरं भवति -
- | | |
|--------------|---------------|
| (1) रेखांशाः | (2) अक्षांशाः |
| (3) चापांशाः | (4) नतांशाः |
05. लग्नार्कयोरन्तरं भवति -
- | | |
|---------------|------------|
| (1) इष्टकालः | (2) नतकालः |
| (3) विषुवकालः | (4) चरकालः |
06. अहोरात्रे क्षितिजोन्मण्डलयोरन्तरम् -
- | | |
|----------------|---------------|
| (1) मध्यकालः | (2) नतकालः |
| (3) चरखण्डकालः | (4) उन्नतकालः |
07. देवासुराणां क्षितिजं भवति -
- | | |
|----------------|---------------------|
| (1) अपमवृत्तम् | (2) विषुवद्वृत्तम् |
| (3) अयनवृत्तम् | (4) पूर्वापरवृत्तम् |
08. वृत्तपादे ज्या पिण्डानि -
- | | |
|-----------------|------------------|
| (1) पञ्चविंशतिः | (2) चतुर्विंशतिः |
| (3) षड्विंशतिः | (4) विंशतिः |
09. मद्यग्राभुजे तद्धतिः कर्णस्तदा क्रान्तिज्या भुजे -
- | | |
|-------------------|--------------|
| (1) शंकुः | (2) समशंकुः |
| (3) उन्मण्डलशंकुः | (4) कोणशंकुः |
10. स्फुटलम्बनं भवति -
- | | |
|---------------|---------------|
| (1) भवृत्ते | (2) कालवृत्ते |
| (3) अहोरात्रे | (4) अचनमण्डले |

11. उदयान्तराभावो भवति -
 (1) तुलादौ (2) मिथुनादौ
 (3) सिंहादौ (4) धन्वादौ
12. भुजांशविधुवांशयोरन्तरम् -
 (1) भुजान्तरम् (2) स्वष्टान्तरम्
 (3) वेलान्तरम् (4) उदयान्तरम्
13. शनेः परमकालांशाः -
 (1) 17 (2) 15
 (3) 12 (4) 14
14. याम्यगोलेऽधिकतं दिनमानं भवति -
 (1) सायनमेषारम्भे (2) सायनकर्करम्भे
 (3) सायनधन्वारम्भे (4) सायनमकरारम्भे
15. विषुवंशकोट्यंशा वर्तन्ते -
 (1) भवृत्ते (2) क्षितिजवृत्ते
 (3) अयनवृत्ते (4) कालवृत्ते
16. ग्रहक्षितिजे समध्रुवप्रोतयोरन्तरम् -
 (1) आयनवलनम् (2) आक्षवलनम्
 (3) स्पष्टवलनम् (4) शरजवलनम्
17. सोमार्कभगणयोरन्तरम् -
 (1) सौरमासः (2) चान्द्रमासः
 (3) अधिमासः (4) सावनमासः
18. खट्वरराशेः मानम् -
 (1) शून्यम् (2) अनन्तम्
 (3) एकम् (4) एकासन्नम्

17P/252/17

19. द्वितीयपदे कोटिज्यायाः मानं भवति -

- | | |
|-------------|------------|
| (1) ऋणम् | (2) धनम् |
| (3) शून्यम् | (4) अन्यम् |

20. $\sqrt{10 \times \text{भुज्या}^2}$ भूपरिधिः, शतयस्तिमतम् -

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| (1) सूर्यसिद्धान्तस्य | (2) शिरोमणेः |
| (3) ब्रह्मस्फुटस्य | (4) सिद्धान्तशेखरस्य |

21. चान्द्रसौरमासमोरन्तरम् -

- | | |
|--------------|------------------|
| (1) क्षयमासः | (2) सावनमासः |
| (3) अधिमासः | (4) नाक्षत्रमासः |

22. सूर्योदयोरन्तर्वर्ती कालः -

- | | |
|-------------|----------------|
| (1) चान्द्र | (2) नाक्षत्रम् |
| (3) सावनः | (4) सौरः |

23. यक्ष कुज्या भुजः क्रान्तिज्या कोटिस्तत्र कर्णः -

- | | |
|-------------|--------------|
| (1) पलकर्णः | (2) तद्धृतिः |
| (3) समशंकुः | (4) अग्रा |

24. लग्नविन्दोर्नवत्यंशैर्भवति -

- | | |
|----------------------|-----------------|
| (1) दृक्क्षेपवृत्तम् | (2) भवृत्तम् |
| (3) नाडीवृत्तम् | (4) दृग्वृत्तम् |

25. द्युज्याचापांशैर्ध्रुवात् भवति -
 (1) क्रान्तिवृत्तम् (2) अहोरात्रवृत्तम्
 (3) नाडीवृत्तम् (4) पूर्वापरवृत्तम्
26. ध्रुवखमध्ययोरन्तरं भवति -
 (1) अक्षांशाः (2) नतांशाः
 (3) लम्बांशाः (4) रेखांशाः
27. अन्त्यफलज्या भवति -
 (1) समध्रुवप्रोतमोरन्तरम् (2) कक्षाप्रतिवृत्तयोरन्तरम्
 (3) क्षितिजोन्मण्डलयोरन्तरम् (4) कदम्बध्रुयोरन्तरम्
28. मन्दस्पष्टगतिषः ऋ शीघ्रगतिफलम्, शत्यस्य मानम्
 (1) मध्यमागतिः (2) स्पष्टागति
 (3) मन्दस्पष्टागति (4) शीघ्रागतिः
29. अक्षाशक्रन्त्योरन्तरं नतांशाः -
 (1) उत्तरगोले (2) विषुववृत्ते
 (3) क्षितिजवृत्ते (4) याम्यगोले
30. उन्नतांशा भवन्ति -
 (1) दृग्वृत्ते (2) क्षितिजवृत्ते
 (3) अहोरात्रवृत्ते (4) पूर्वापरवृत्ते
31. सूर्येन्दुसङ्गमः -
 (1) सम्पातः (2) विक्षेपः
 (3) दर्शः (4) अधिशेषः

17P/252/17

32. $\frac{\text{कुज्या} \times \text{अन्त्या}}{\text{चरज्या}}$, इत्यस्य मानं भवति -
(1) द्रुतिः (2) द्युज्या
(3) तद्धृत (4) क्रान्तिज्या
33. शिष्यधीवृद्धिदग्रन्थः लिखितः -
(1) आर्यभटेन (2) लल्लेन
(3) ब्रह्मगुप्तेन (4) उत्पलेन
34. नखपञ्चशके समुद्भवः -
(1) वराहः (2) ब्रह्मगुप्तः
(3) श्रीधरः (4) श्रीपतिः
35. रचनाकारोऽस्ति लघुमानसस्य -
(1) आर्यभट्टः (2) कमलाकरभट्टः
(3) उत्पलभट्टः (4) मुञ्जालभट्टः
36. ज्याखण्डैर्विना चापादेव ज्यानयनं विहितम् -
(1) भास्करेण (2) वराहेण
(3) श्रीपतिना (4) श्रीधरेण
37. उत्पत्तिः रसगुणपूर्णमहीशकेऽभवत् -
(1) भास्करप्रथमस्य (2) भास्करद्वितीयस्य
(3) प्रभाकरस्य (4) महीधरस्य
38. निमेषस्य खरामभागो भवति -
(1) तत्वरः (2) त्रुटिः
(3) क्षणः (4) काष्ठा
39. अद्भुतसागरग्रन्थः रचितः -
(1) बल्लालसेन (2) लक्ष्मणसेनेन
(3) केशवेन (4) मकरन्देन

40. वित्तिभनतांशाः भवन्ति -

- | | |
|---------------------|----------------|
| (1) अपमवृत्ते | (2) दृग्वृत्ते |
| (3) दृक्क्षेपवृत्ते | (4) कोणवृत्ते |

41. भूकेन्द्रशंकुमूलान्तरं भवति -

- | | |
|--------------|------------------|
| (1) अग्रा | (2) दृग्य्या |
| (3) दिग्य्या | (4) क्रान्तिज्या |

42. नक्षक्षस्य मानं भवति -

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| (1) $12^{\circ}, 20'$ | (2) $12^{\circ}, 00'$ |
| (3) $15^{\circ}, 20'$ | (4) $13^{\circ}, 20'$ |

43. समच्छेदितस्य गोलधनक्षेत्रस्याकारो भवति -

- | | |
|---------------------|-------------------|
| (1) दीर्घवृत्ताकारः | (2) अण्डाकारः |
| (3) वृत्ताकारः | (4) परिमण्डलाकारः |

44. उन्नतांशचापस्य ज्या -

- | | |
|--------------|------------|
| (1) पलभा | (2) शंकुः |
| (3) दृग्य्या | (4) कुज्या |

45. उत्क्रमज्या भवति -

- | | |
|------------------|----------------|
| (1) 1 - ज्या | (2) 1 - कोछे |
| (3) 1 - कोटिज्या | (4) 1 - स्पर्श |

17P/252/17

46. 30 अंशानां कोटिज्यायाः मानम् -

(1) $\frac{1}{2}$

(2) $\frac{\sqrt{3}}{2}$

(3) $\frac{1}{\sqrt{2}}$

(4) $\frac{1}{\sqrt{3}}$

47. वृषराशेः लङ्कोदयासवः -

(1) 1670

(2) 1795

(3) 1935

(4) 1328

48. छायाभावो भवति -

(1) अक्षांशनतांशसाम्ये

(2) अक्षांशक्रान्तिसाम्ये

(3) अक्षांशलम्बांशसाम्ये

(4) अक्षांशोन्नतांशसाम्ये

49. चान्द्रसावनादिनामन्तरं भवति -

(1) सौरदिनानि

(2) अधिदिनानि

(3) क्षयदिनानि

(4) चान्द्रदिनानि

50. कक्षावृत्तस्य केन्द्रं भवति -

(1) च्युतिकेन्द्रेम्

(2) शीघ्रकेन्द्रम्

(3) मन्दकेन्द्रम्

(4) भूकेन्द्रम्

51. एकस्मिन्महायुगे बुधस्य भगणाः भवन्ति -

(1) 432000

(2) 4320000

(3) 43200000

(4) 43200

52. "त्रि ± शीघ्रन्त्यफलज्या" इत्यस्य मानं भवति -
 (1) ग्रहकर्णः (2) मन्दकर्णः
 (3) शीघ्रकर्णः (4) स्पष्टकर्णः
53. लम्बगुणं भूम्यर्धं भवति -
 (1) वृत्तफलम् (2) चतुर्भुजफलम्
 (3) त्रिभुजफलम् (4) समचतुरस्रफलम्
54. परिधि: × व्यासः, इत्यस्य मानं भवति -
 (1) घनपृष्ठफलम् (2) गोलपृष्ठफलम्
 (3) गोलघनफलम् (4) गोलफलम्
55. शंकोः छाया कदाऽपि शून्या न भवति -
 (1) क्रान्तितोऽधिकाक्षांशदेशेषु (2) क्रान्तिसमाक्षांशदेशेषु
 (3) क्रान्तितः न्यूनाक्षांशदेशेषु (4) क्रान्तिशून्यदेशेषु
56. परमाल्पक्रान्तिकोज्या भवति -
 (1) 66° (2) 33°
 (3) 24° (4) 90°
57. समपदान्ते कुजस्य मनपरिधिरस्ति -
 (1) 49 अंशाः (2) 75 अंशाः
 (3) 32 अंशाः (4) 33 अंशाः
58. विषमपदान्ते गुरोः मन्दपरिधिर्भवति -
 (1) 72 अंशाः (2) 32 अंशाः
 (3) 48 अंशाः (4) 28 अंशाः

17P/252/17

59. समपदान्ते शुक्रस्य शीघ्रपरिधिः -

- | | |
|----------|----------|
| (1) 262° | (2) 235° |
| (3) 133° | (4) 232° |

60. विषमपदान्ते शनेः शीघ्रपरिधिरस्ति -

- | | |
|---------|---------|
| (1) 72° | (2) 40° |
| (3) 39° | (4) 70° |

61. शिरोमणेः वासनावार्तिकभाष्यं लिखितम् -

- | | |
|--------------------|----------------|
| (1) नृसिंहदैवज्ञेन | (2) मुनीश्वरेण |
| (3) गणेशदैवज्ञेन | (4) सूर्यदासेन |

62. सूर्यसिद्धान्तस्य सुधावर्षिणीटीका लिखिता -

- | | |
|-----------------|--------------|
| (1) कपिलेश्वरेण | (2) सुधाकरेण |
| (3) वापूदेवेन | (4) कमलाकरेण |

63. काश्यां मेषमीनयोरुदयपलानि सन्ति -

- | | |
|---------|---------|
| (1) 304 | (2) 253 |
| (3) 342 | (4) 221 |

64. विवस्वतः मण्डलस्य विष्कम्भो वर्तते -

- | | |
|----------|----------|
| (1) 6500 | (2) 6200 |
| (3) 6400 | (4) 6000 |

65. पौणमास्यन्ते सूर्यन्द्वोरन्तरम् -

- | | |
|--------------------|--------------------|
| (1) 90 अंशात्मकम् | (2) 120 अंशात्मकम् |
| (3) 180 अंशात्मकम् | (4) 360 अंशात्मकम् |

66. देवानामर्कोदयो भवति -
 (1) कर्कादौ (2) मेषादौ
 (3) तुलादौ (4) मकरादौ
67. भूवृत्तपादे पूर्वस्यां विन्श्रुता -
 (1) लंका (2) केतुमालः
 (3) भद्राश्व (4) यमकोटी
68. नवतिर्लम्बांशाः भवति -
 (1) निरक्षे (2) ध्रुवे
 (3) साक्षे (4) उज्जैन्याम्
69. लोकोः स्वस्थानात् सर्वतोमुखं वसुन्धरां चक्राकारां पश्यन्ति -
 (1) समतलतया (2) अल्पकायतया
 (3) अगोलतया (4) बृहदकायतया
70. शर्वरी सदा त्रिंशन्नाडिका भवति -
 (1) यमकोट्याम् (2) उज्जैन्याम्
 (3) रोहितके (4) अन्यत्रम्
71. मेषादिचक्रार्धे सदा भास्करं पश्यन्ति -
 (1) असुराः (2) किन्नराः
 (3) मानवाः (4) सुराः
72. महत्या कक्षया गच्छम् ततः ततः स्वल्पम् -
 (1) चन्द्रः (2) बुधः
 (3) शनैश्चरः (4) शुक्रः

17P/252/17

73. खत्रयाब्धिद्विदनाः कक्षाऽस्ति -

- | | |
|----------------|----------------|
| (1) कुजस्य | (2) सशीघ्रस्य |
| (3) हिमदीधितेः | (4) स्वर्भानोः |

74. सिद्धान्तचुडामणिग्रन्थोऽस्ति -

- | | |
|---------------|----------------|
| (1) दिवाकरस्य | (2) कमलाकरस्य |
| (3) रंगनाथस्य | (4) गोपीनाथस्य |

75. याम्यगोले विषुवदिने शंकोः छाया भवति -

- | | |
|-----------------|---------------|
| (1) प्राच्याम् | (2) उदीच्याम् |
| (3) प्रतीच्याम् | (4) याम्ये |

76. $y^2 - r^2$ इत्यस्य मानं भवति -

- | | |
|----------------------|--------------------------------|
| (1) $(y + r)(y - r)$ | (2) $(y - r)(y - r)$ |
| (3) $(y + r)(y + r)$ | (4) $(y \times r)(y \times r)$ |

77. एकस्मिन्नसौ भवन्ति -

- | | |
|--------------|----------------|
| (1) 10 पलानि | (2) 10 विपलानि |
| (3) 10 लवाः | (4) 10 रेणवः |

78. जयसिंहकृतवेधशाला नास्ति -

- | | |
|---------------|-----------------|
| (1) मथुरायाम् | (2) वाराणस्याम् |
| (3) प्रयागे | (4) उज्जैन्याम् |

79. अहर्गणः- $\frac{\text{आहर्गणः}}{60} + \frac{3 \times \text{आहर्गणः}}{22}$ - इत्यनेन भवति -
- (1) अहर्गणोत्पन्नरविः (2) अहर्गणोत्पन्नचन्द्रः
 (3) अहर्गणोत्पन्नगुरुः (4) अहर्गणोत्पन्नभौमः
80. $\left(\frac{\text{आहर्गणः}}{12}\right)^0 - \left(\frac{\text{आहर्गणः}}{71}\right)^1$, इत्यनेन साध्यते -
- (1) अहर्गणोत्पन्नाराहुः (2) अहर्गणोत्पन्नागुरुः
 (3) अहर्गणोत्पन्नचन्द्रः (4) अहर्गणोत्पन्नशनिः
81. रविचन्द्रयोर्पूर्वापरान्तराभावो भवति -
- (1) पूर्णिमान्ते (2) पूर्णिमादौ
 (3) दर्शान्ते (4) दर्शादौ
82. लम्बितचन्द्रर्कयोरन्तरं भवति -
- (1) दृग्लम्बनम् (2) नतकालम्
 (3) नतिः (4) स्पष्टलग्नम्
83. आयनदृक्कर्म भवति -
- (1) ग्रहक्षितिजे (2) याम्योत्तरे
 (3) नाडीवृत्ते (4) क्रान्तिवृत्ते
84. भुजांशविषुवांशास्तुल्याः भवन्ति -
- (1) कर्कादौ (2) मिथुनादौ
 (3) कुम्भादौ (4) वृषादौ

17P/252/17

85. ग्रहाणां गतिर्भवति -

- | | |
|-------------|------------|
| (1) चतुर्धा | (2) सप्तधा |
| (3) नवधा | (4) अष्टधा |

86. सम्प्रति भारतस्य मानकरेखाऽस्ति -

- | | |
|----------------------|----------------------|
| (1) $83^{\circ} 00'$ | (2) $82^{\circ} 30'$ |
| (3) $83^{\circ} 20'$ | (4) $77^{\circ} 12'$ |

87. मध्यमग्रहनीचयोरन्तरं भवति -

- | | |
|--------------------|---------------------|
| (1) शीघ्रकेन्द्रम् | (2) तिथिकेन्द्रम् |
| (3) मन्दकेन्द्रम् | (4) स्पष्टकेन्द्रम् |

88. $\frac{\text{परमरारज्या} \times \text{सपादोज्या}}{\text{त्रिज्या}}$, इत्यस्य मानं भवति -

- | | |
|----------------|----------------------|
| (1) इष्टशरज्या | (2) इष्टक्रान्तिज्या |
| (3) इष्टचरज्या | (4) इष्टद्विज्या |

89. वलयग्रहणं भवति -

- | | |
|---------------|-------------|
| (1) चन्द्रस्य | (2) अर्कस्य |
| (3) ज्ञस्य | (4) सितस्य |

90. परिधिव्याससम्बन्धयोः शुद्धमानमस्ति -

- | | |
|------------|------------|
| (1) 3.1416 | (2) 3.1410 |
| (3) 3.1400 | (4) 3.1428 |

91. ऋग्वेदज्योतिषमस्ति -

- | | |
|--------------------|--------------------|
| (1) 20 पद्यात्मकम् | (2) 30 पद्यात्मकम् |
| (3) 40 पद्यात्मकम् | (4) 36 पद्यात्मकम् |

92. नारदाय ज्योतिषशास्त्रमुक्तवान् -

- | | |
|-------------|---------------|
| (1) ब्रह्मा | (2) नारायणः |
| (3) सूर्यः | (4) पुलस्त्यः |

93. पृथिव्यामाकृष्टिशक्तिरस्तीति कथिता -

- | | |
|--------------|--------------|
| (1) सुधाकरेण | (2) कमलाकरेण |
| (3) भास्करेण | (4) दिवाकरेण |

94. सूर्यसिद्धान्तानुसारं नक्षत्रादीनां पश्चिमाभिमुखगतेः कारणमस्ति -

- | | |
|---------------------|-------------------------|
| (1) जीयमानवायुः | (2) अतिजवात् |
| (3) भूमेरक्षभ्रमणम् | (4) सूर्यस्याक्षभ्रमणम् |

95. लम्बानाऽभावो भवति -

- | | |
|--------------------------|---------------------------|
| (1) सूर्योदयलग्नसमे भानौ | (2) सूर्यास्तलग्नसमे भानौ |
| (3) मध्यलग्नसमे भानौ | (4) दक्षिणलग्नसमे भानौ |

96. मन्वन्तरं भवति -

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| (1) युगानां सहस्रणाम् | (2) युगाशतानाम् |
| (3) युगानां सप्ततिः | (4) युगानां सप्तति सैका |

17P/252/17

97. पूर्वापरवृत्तस्थग्रहात् क्षितौ लम्बः -

- | | |
|----------------|-------------------|
| (1) मध्यमशंकुः | (2) उन्मण्डलशंकुः |
| (3) समशंकुः | (4) कोणशंकुः |

98. $r = 8y + 4$, इत्यस्य तात्कालिकसम्बन्धः

- | | |
|--------|--------|
| (1) 05 | (2) 08 |
| (3) 04 | (4) 01 |

99. विषुवत्क्रान्तिवृत्तयोरन्तरं परमं भवति -

- | | |
|--------------|---------------|
| (1) क्षितिजे | (2) अहोरात्रे |
| (3) गोलसन्धौ | (4) अनयवृत्ते |

100. क्रान्तिमण्डले भवति -

- | | |
|-------------------|-----------------|
| (1) स्पष्टलम्बनम् | (2) स्पष्टानतिः |
| (3) दृग्लम्बनम् | (4) परमलम्बनम् |

101. चलनकलनं लिखितम् -

- | | |
|---------------|------------------|
| (1) बापूदेवेन | (2) लक्ष्मणसेनेन |
| (3) कमलाकरेण | (4) सुधाकरेण |

102. $r = 2(y + 3) + 3(y + 4)$, इत्यस्य तात्कालिक - सम्बन्धः

- | | |
|-------|-------|
| (1) 5 | (2) 7 |
| (3) 8 | (4) 2 |

103. हृतिः भवति -

- | | |
|--------------------|--------------------|
| (1) द्युज्यावृत्ते | (2) त्रिज्यावृत्ते |
| (3) क्रान्तिवृत्ते | (4) कदम्बवृत्ते |

104. मन्दभुजफलस्य धनुः भवति -

- | | |
|---------------|--------------------|
| (1) मन्दफलम् | (2) मन्दस्पष्टफलम् |
| (3) शीघ्रफलम् | (4) अन्यम् |

105. मध्यमस्पष्टसावनाहर्गणयोरन्तरं भवति -

- | | |
|-------------------|----------------|
| (1) स्पष्टान्तरम् | (2) भुजान्तरम् |
| (3) उदयान्तरम् | (4) चरान्तरम् |

106. मानैक्यार्धशरयोरन्तरं भवति -

- | | |
|------------------------|--------------------|
| (1) विस्थापितप्रमाणम् | (2) मदीर्घप्रमाणम् |
| (3) स्थित्यर्धप्रमाणम् | (4) स्थगितप्रमाणम् |

107. छाद्याबिम्बादधिकग्रासप्रमाणे भवति -

- | | |
|-----------------|-----------------|
| (1) सर्वग्रहणम् | (2) खण्डग्रहणम् |
| (3) वलयग्रहणम् | (4) ग्रहणाभावः |

108. $\frac{\text{अग्रा} \times \text{लम्बज्या}}{\text{समशंकुः}}$, इत्यास्थ मानमस्ति -

- | | |
|--------------|--------------|
| (1) कुज्या | (2) अपमज्या |
| (3) अक्षज्या | (4) त्रिज्या |

17P/252/17

109. भास्कराचार्यमते भूव्यासमानमस्ति -

- | | |
|----------|----------|
| (1) 1581 | (2) 1681 |
| (3) 1781 | (4) 1881 |

110. अष्टादशनिमेषैः भवति -

- | | |
|----------------|-----------------|
| (1) एका काष्ठा | (2) एका त्रुटिः |
| (3) एका कला | (4) एका घटिका |

111. ओरायननामकः ग्रन्थः लिखितः -

- | | |
|---------------------|-------------------|
| (1) बालेश्वररावेन | (2) बालाजीधुनाथेन |
| (3) बालगंगाधरतिलकेन | (4) बालकृष्णेन |

112. विम्बोपरिकृतकदम्बप्रोतक्रान्तिवृत्तयोः सम्पातो भवति -

- | | |
|-----------------------|-------------------|
| (1) नाडीवृत्तभोगग्रहः | (2) ध्रुवभोगग्रहः |
| (3) विम्बीयभोगग्रहः | (4) स्थानभोगग्रहः |

113. सम्राटयन्त्रस्य निर्माणं भवति -

- | | |
|-------------------------|---------------------|
| (1) क्रान्तिवृत्तधरातले | (2) नाडीवृत्तधरातले |
| (3) समवृत्तधरातले | (4) कोणवृत्तधरातले |

114. दक्षिणगोले सर्वाधिकदिनमानं भवति -

- (1) दिसम्बरमासस्य 22 तमे दिनाङ्के
- (2) जूनमासस्य 21 तमे दिनाङ्के
- (3) मार्चमासस्य 20 तमे दिनाङ्के
- (4) सितम्बरमासस्य 21 तमे दिनाङ्के

115. मुस्लिम पञ्चाङ्गं भवति -

- | | |
|-----------------------|----------------------------|
| (1) चान्द्रसौरात्मकम् | (2) शुद्धचान्द्रमासात्मकम् |
| (3) सावनमासात्मकम् | (4) शुद्धसौरमासात्मकम् |

116. मानवप्रयुक्तकालमाने न व्यवहिलयते -

- | | |
|---------------|------------------|
| (1) सौरमानम् | (2) चान्द्रमानम् |
| (3) सामनमानम् | (4) ब्राह्ममानम् |

117. सूर्यविद्वान्तानुसारमयनांशस्य वार्षिकगतिरस्ति -

- | | |
|--------------|--------------|
| (1) 60 विकला | (2) 64 विकला |
| (3) 52 विकला | (4) 54 विकला |

118. सायनरवेर्दोऽज्या भवति -

- | | |
|---|--|
| (1) $\frac{\text{द्युज्या} \times \text{परमक्रान्तिज्या}}{\text{त्रिज्या}}$ | (2) $\frac{\text{अश्रज्या} \times 12}{\text{लम्बज्या}}$ |
| (3) $\frac{\text{त्रिज्या} \times \text{क्राज्या}}{\text{परमक्राज्या}}$ | (4) $\frac{\text{त्रिज्या} \times \text{क्राज्या}}{\text{लम्बज्या}}$ |

119. अनिरुद्धः कस्य संज्ञाऽस्ति ?

- | | |
|--------------|---------------|
| (1) सूर्यस्य | (2) विष्णोः |
| (3) शिवस्य | (4) इन्द्रस्य |

120. षड्मासात्मकं रात्रिर्भवति -

- | | |
|------------------|-----------------------|
| (1) ध्रुवप्रदेशे | (2) साइवेरियाक्षेत्रे |
| (3) नोर्वेदेशे | (4) निरक्षदेशे |

17P/252/17

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

22

17P/252/17

ROUGH WORK
रफ़ कार्य

23

P.T.O.

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 30 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त, लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।
6. ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।
7. उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।
8. प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त केवल ओ एम आर उत्तर-पत्र परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।